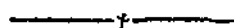
प्रस्तावना.

अहो सुज्ञ जैनबंधुओ पुर्व पुन्यना अतीशयपणाथी प्राप्त थएलो अने मोक्षगतीना अद्वीतिय साधनरुप मनुष्य नव पामीने तेनो पुरतो उप योग करवो जोइए. आ पांचमा आ रामां नव्य जीवोना उपगारना कर णहार मुनीराज महाराजश्री राजेन्द्र सूरिजी श्री वीरमगाम चोमासु पधा रेला तेमने व्याख्यानमा उपदेश मार्गे परुपणा करी जे मोक्षनो मा र्ग ज्ञान दरशन ने चारीत्रछे ज्ञान चारित्रनं मूल समकितछे, समकित

विना ज्ञान चारित्र आवे नहीं, सम
कित देवगुरु धर्मनुं स्वरूप समज्या
विना पामी शके नहीं ते विना सर्व
क्रीया सिध्धांतमा चारगतीने आपवा
वालीछे मोक्ष नणी नथी एम उपदेश
सांनल्याथी अत्तरेना सघे विनती
करी जे देवगुरु धर्मनो जेम अमो
मंदबुधीवालाने प्रतक्षपणे जलदीथी
बोध थाय एहवो अमारा उपर कृपा
करी नापाथी ग्रथ बनावी आपी उप
गार करो ए रीते वीरमगामना संघ
ना अति आग्रहथी आ तत्वविवेक
नामे नापामां ग्रंथ बनाव्योछे ते माटे
अहो सद्गृहस्थो आ पुस्तकमां जे

जे बावतो लखवामां आवीछे तेने स म्येक् प्रकारे पुरवापर न्याययुक्तिए क री शास्त्रमां तपाशी जोइ अने उपयोग देइने तथा मत हठ छोडी कुमति दूर करी समता भावसाहित जे पुरुष वांच शे तेने घणो गुण मालम पडशे मा टे हे सद्गृहस्थो आ अमूल्यरत्न जेवुं लघु पुस्तकनो लाभ लेवा चुक शो नही.



॥ तत्व विवेक ॥

दुहो.

अलख निरंजन रुपहे । विश्वविदित नीरधार ॥ पूरण ब्रह्म स्वरूपकुं । वंड वारंवार ॥ सुवर्ण दिप्ती तनु जस जशे । तीर्थंकर मुख वास॥ सोनागवती मुजने दीयो । वचन विवेक विलास ॥ १ ॥

आ संसार सागर अपार डुखागर, सर्व असार स्वप्न जाल समान तेमां नव्य जीव अनेक प्रकारना जन्म जरा रोग सोग मोहादीके करी पीमीज रह्या छे, पण तेउने मनुष्य अ

वतार पामवो अती डक्कर छे, ते म
नुष्य अवतार कोइ पुन्य उदये म
ल्यो तोपण ते जीवोने मीथ्यात्व मो
हना उदयथी जे पुर्वे डःख अनुभ
व्यां ते स्मर्ण थतां नथी जेम बो
रनी विणनारी कन्या राजानी राणी
थइ पछी बोरनी जग्या जुली गइ
तेम ते कथा आवी रीते छे.

अयोध्या नगरीने विषे शत्रुने जी
ते एवो राजा इक्ष्वाकु वंशनो योध
नामे थयो तेज नगरीमा एक पक
प्रिय नामे कुमार छे ते कुमार ल
क्ष्मीवत छे, न्यायवत छे, पण तेने बी
जाना गुण सामलीने इर्षा बहु थाय;

जो कोइवार कोइना गुण वर्णव सान्न
ले तो तेनुं इर्पा थकी माथु डखवा
आवे वली माथु कुटवा मंमी जाय
तेवारे तेनुं कुटुंब तेने वारे तोपण
ते न रहे. तेवारे तेना दीकरा तेनु
कष्ट देखी कहेवा लाग्या के पीताजी
तमो कोइनी वात सांन्नली शक्ता
नथी ते माटे ज्यां कोइ माणस न
होय तेवा वन विषे रहोतो ठीक. ए
वामां कोइनो विवाह थयो ते आवी
ने वात करवा लाग्यो के मे वि
वाहमां एवुं जमण कर्यु के लोको ज
मीने घणा खुशी थया. वली हझारो
रुपिया वावर्या एवी रीते मोटी मोटी

वातो करी, ते सांभली पंकप्रियने ह
र्षा थइ, के अमारी आगल खोटी
वमाइ करेछे एवुं कही माथु कुटवा
माम्यु एवामा तेना दीकरा आवीने
बोल्या के पीताजी तमे एकात वन
मा रहो त्यां अमे तमने एक झुंप
मी वनावी आपीए अने खावानु
त्या पहोंचामीशु माटे तमो त्यां
सुखेथी रहेज्यो ए वात साभली कुं
भार हर्ष पाम्यो तेवारे ते पुत्रोए एक
वनने विषे नजीक तलाव हतु तीहां
झुंपमी वाधी आपी वली खावानी
तथा पेहेरवा उढवानी सर्व सामग्री
त्यां पहोचामी दीधी. हवे ते कुंभार

सुखे ते वनमां रहे छे एवा समयने
विषे एक राजा शिकार रमवाने नि
कल्यो छे तेमां पोते भुलो पमी गयो
भूख तरस घणी लागी छे तेवामां
फरतो फरतो तेज वनने विषे ज्यां
कुंभार झुंपमी वांधीने रहेलो छे
त्यां आव्यो राजाने जोइने कुंभार
विचारवा लाग्यो के आ कोइ भुलो
पम्यो थको भूख्यो तरस्यो अहीयां
आव्यो छे. एम जाणी पोताना घमा
मां भरेलु जल कमल थकी ढांकेलुं
सुगंधदार अती मीठुं एवुं जल ल
इने राजाने पायुं अने पोताना घर
मां जे करेली रसोइ हती ते राजाने

जमामी दीधी तेथी राजा घणो खुशी थयो अने ते कुमारने केहेवा लाग्यो के अरे तु इहा ग्रहस्थीने वेषे आ वन मां केम रहेछे; वनमा तो तापस रहे, ग्रहस्थीने रेहेवानुं शु जरुर छे. कुमार बोल्यो हे राजन् आ जीव आ ससारमा पोताना दोषे करीने दुःख पामे छे एमा काइ सदेह नथी राजा बोल्यो केम एम कहोछो? तेवारे कुमार बोल्यो हे राजन् आ ससारमां बहु लोक पोतानी बमाइ करवाने अजुक बोलेछे ते सामली मने दुःखनी करनारी एवी आ इर्षा थाय ते हुं काइ वरजी शक्तो नथी, अने मारुं

ाथुं में मारी मेले कुटी कुटीने खोखरु करी नाख्यु ते माटे हुं आ वनमां रह्यो छुं. ए सांभली राजा कृपा करी ते कुंभारने केहेवा लाग्यो के हे कुंभार ए तारुं सर्व दुःख हु कापीश. तारी आगल कोइ पण बभाइ करशे नहीं, अने जे करशे तेने हुं शिक्षा करीश. तु मारे त्यां रहेजे, उपगारी ना गुण लेवा एज रीती होय छे. के मके एणे राजाने अन्नदान दीधुं छे एवी वात करेछे एटलामां त्यां राजानी सेना आवी मली, त्यारे राजा ते कुंभारने पोतानी साथे हाथी उपर बे सामी नगरमां लइ जायछे एवामां

मार्गमा एक बोरमीना झाड नीचे
बोर वीणती महा रूपवंती कन्या दी
ठी तेने राजाए पुछ्युं के, हे मृगाक्षी
तारु नाम शुं ? ने केनी तुं दीकरी ?
तेवारे ते बोली खला मारु नाम छे
अने वाहीकनी पुत्री छुं एवा वचन
साम्नळी राजा बहु आनद पाम्यो;
अने पोताने घेर जइने पोताना प्र
धानने वाहीकने घेर मोकळी खला
नामे जे कन्या छे तेनु मागु कराव्युं
अने पोते विवाह करीने पोतानी प
टराणी थापी अने ते कुमारने पो
ताना मेहेलमा राख्यो सर्व प्रकार
ना भोग भोगवे छे राजाए सर्व लो

कोनेकही दीधु के जे कोइ एना आग
ल अदकी वात करशे तेने दंम आ
पीश. एम एक वर्ष कुंनारने सुख भो
गवता थयुं. एवामां एक दिवसे राजा
बहार रमवा नीकल्यो ते वखते पकत्रि
य कुंनार अने पोतानी पटराणी स
र्वे साथे छे एवामां ते बोरमी राजानी
नजरे पडी ते जोइ राजा राणीने केहे
वा लाग्यो के हे प्रिये आ झाम्ने अ
ने आ जमीनने तमे जाणोछो? त्यारे
राणी बोली के हे स्वामीनाथ हु नथी
जाणती. एवुं राणीनुं बोलवुं सांभ
ळीने कुंनार इर्षामां भरायो थको
शत्रुनी पेठे पोतानी मुठीथी पोतानुं

माथुं कुटवा लाग्यो जे आ राणी का
ले तो बोर वीणती हती, अने अ
त्यारे कहेछे के हु नथी जाणती रा
जाए पुछ्यु अरे आने कोणे इर्षा
पमाडी त्यारे लोक बोल्या के कोइए
नथी पमाडी त्यारे राजाए ते कुंवार
ने कह्युं के तमे माथु शा माटे कुटो
छो? त्यारे कुंवारे एक दुहो कह्यो.

काले बोर तु विणती । आज न
जाणे खख॥ पुणरपी अम्वीए करी
शुं । धरु न सहु ए अणख ॥

ए साम्भली राजा विचारवा लाग्यो
के आ राणी काइ अजुक्त बोलती
नथी केमके में एने सर्वे सुख आप्यु

तेथी पुर्वनी अवस्था नुली गइ. एमां कांइ अधिकपणु नथी. ए फोकट माथुं कुटेछे. राजाए समजाव्यो पण समज्यो नही त्यारे राजाए शीख दीधी एटले पोते वनमां जइने रह्यो, अने पोते इर्षा ना जोगथी मर्ण पाम्यो. हवे जुवो! आ नवनी वात पण राणीने सुखमा याद आवी नही तो परनवनी वात केम याद आवे! ए कारणे ए जीव सुखमां पड्यो थको पुर्वे नोगव्यां दुःख ते नथी जाण तो तेथी कोइ तो ससारसुख आपे तेनेज देव करी मानी रह्याछे, कोइ हरि हरादिकने तरण तारण मांनी रह्या छे, कोइ वांम मार्गमा पमी गयाछे, कोइ ना

स्तीक थइ गयाछे ते तो एम कहेछे के खाधु ते मीठुं अने आगल्यु नव कीणे दीठुं एवु बोलेछे तथा कोइ खावापीवा ना लोलपी थया थका अनेक प्रकारना आरम्भ समारम्भ करीने मनुष्यपणु हारी रह्याछे अने कोइ पुन्यने जोगे मनुष्यपणु आर्यक्षेत्र श्रावककुल इत्यादिक पाम्या तोपण श्री तिर्थंकर भगवंते परुप्यो जे निग्रथमार्ग तेहनी रुचीकालना महात्मथी करी शक्ता नथी नीकेवल जैनी नाम धरावी कुम्कपटना व्यापार करी मनुष्यपणुं हारी जायछे पण तेम ने केवली भापीत धर्ममलतो नथी अने जो कोइ अल्पस्तव जैनधर्मनी रुची

पामे तो तें अनेक प्रकारना पासत्थादिक तथा गच्छमतना भेद तथा भेख देखीने तेमनुं मन भामाभोल थइ जाय तथा एकांत पक्षे थइ जायछे अने नवाभी नंदी थइ धामधुम करवा लागी जायछे अने अहंकार कलुशीत मति थयो थको जैन मार्गथी विपरीत परिणामे वरतीने जे गच्छमतनी परणती थइ तेहनेज केव ली भाषीत मानीने रहेछे तथा कोइ मा र्गानुसारी करणी करेछे ते पण बीजानी निंदा करतो संसारमा रझली जायछे प ण मार्गानुसारीपणानो लाभ लेइ शक्तो नथी माटे शुद्धतत्व जाण्या विना स रधा रहेवी कठणछे ते कारणे ए तत्व

विवेक नामे ग्रथ भव्य जीवोना उपगा
रने अर्थे लखीए छिये, ए ग्रंथ वाचवा
थी तथा सानलवाथी त्रण तत्वनी छे
लखाण थशे तो बहु लाभनु कारणछे
सर्व सिधातनो साराश ए छे जे जीव
ने सम्यक्त पामवु ते अति डुरलभ छे
देवेन्द, चक्रवर्ति, प्रमुखनी रिधि मले
पणसरधा मलवी कठण छे,माटे ए ग्रथ
वाची सारीरीते तत्वनोनिर्णय करवो
ते तत्व त्रण छे, सुदेव, सुगुरु, सुधर्म
तेमां सुदेव श्री अरिहत वितराग अ
ज्ञानादिक अढार दोष रहीत, केवल
ज्ञान, केवल दर्शन सहीत निरविक
री तेमने तरण तारण देव करी सरद

हवा अहीआं कोइ कहेशे के अरिहंत कहोछो हमणांतो कोइना दीठामां आवता नथी, तेनो उत्तर–अहो भव्य च्यार निक्षेपे करी च्यार प्रकारना अरिहंत छे ते कया कया ते कहेछे, श्री ठाणांग सूत्रमां कह्या छे. नामजिन, थापनाजिन, द्रव्यजिन, भावजिन, तेमां नाम जिन एटले नमो अरिहंताणं ए प्रसिद्ध छे, अने थापनाजिन एटले अरिहंतनी प्रतिमा ए वीजा अरिहंत एटले अरिहंततो भरतक्षेत्रमां विद्यमान छे अने द्रव्यअरिहंत ते अरिहंतनो जीव, भावअरिहंत ते समोवसरणमां विराजमान, चोसठइंद्रे पूजीत, चोत्रीस अ

तिशय, पात्रीसवाणी गुण सहीत एवे अरिहततो अहीया विद्यमान नथी पण माहाविदेह क्षेत्रमा विद्यमान छे अने कोइ तिर्थंकरनामकर्म उपार्जनारो जीव हशे तोपण अहीआ व्यवहारथी कहेवामा न आवे माटे वे अरिहंत तो अहीआ नाम थापना निक्षेपे करी विद्यमान छे.

प्रश्न जे तमो नाम अरीहत कहो छो ते ठीकछे पण थापना तो एकेन्द्रि दलछे वली अजीवछे असास्वतीछे तेने अरिहत केम मानीए

उत्तर हे भव्य एम कहेवाथी तमने प्रथम तो सूत्र उथापक दोष आ

व्यो केमके ठाणांग सूत्रमां च्यारेनिक्षे पा सत्य कह्या तथा अनुयोगद्वार सूत्र मांजघन्यथी च्यार निक्षेपा सर्व वस्तुमां देखाड्याछे तमारा सरदहवा प्रमाणे तो त्रण रह्या पण सूत्रनो एक अक्षर उ थापकने अनंत संसारी कह्यो छे तो थापना उथापकने तो सपूर्ण वस्तु उ थापक थइ ए महादोषछे अने तमो था पनाने एकेन्द्रिनु दलछे; अजीवछे एमक होछो ते पण मोटी भूलछे केमके राय पसेणी सूत्र १ जीवाभीगम सूत्र २जं बुद्विपपन्नति सूत्र ३ चंदपन्नत्ति सूत्र४ सूरपन्नति सूत्र ५ भगवति सूत्र ६ ठा णंग सूत्र ७ समवायंग सूत्र ८ उवाइ

सूत्र प्रमुखमा प्रतिमाने गणधरोए
रिहंत सिद्ध कही देखामीठे एमां अरि
हंतना गुण आरोपण करी अरिहंतप
णे इद्रादिके प्रमाण करी पूजीठे, मानी
ठे आशातना टालीठे तेने एकेंद्रीनु द
ल कही थापना उथापोगे ते तमारी
जड्बुद्धिठे केमके प्रतक्ष अरिहंतनु स्व
रूपठे तो एने अजीव मानीने अवगु
णोगे ते पण तमारी भूलठे केमके नाम
निक्षेपाने तो तमे तारकमानोगो ते नाम
कर्म ठे, तिर्थकर नाम कर्म प्रकृति कार्म
ण [illegible] णारूप [illegible] [illegible] ठे,
ए पण [illegible]

गुण विचारवामां आवे छे माटे नामतो लेवुं जोइए.

उत्तर. जेम नामथी अरिहंतना गुण याद आवेछे तेम थापनाथी पण अरिहंतना गुणस्वरूप जाणवामां आवेछे तथा आत्मानुं स्वरूप पण उलखाय छे. परणतीमां समनाव आवेछे एहवो थापना निक्षेपो, एहनो दरिशन करवो शा माटे निषेधो छो.

प्रश्न नाम निक्षेपोतो साक्षात अरिहते अरिहंत कही देखाड्यो छे पण थापनाने तो प्रतिमा कहीछे.

उत्तर. जेम नामने अरिहंत कही देखाड्यो तेम थापनाने पण अरिहंते

जीनवर कहीने रायपसेणी प्रमुख सूत्र
मा देखाडी छे तथा जेम तिर्थंकरनी
आशातना वरजी तेम प्रतिमानी आ
शातना पूर्वोक्त सूत्रोमा वरजी तो थाप
नाने अरिहत केम न मानीये? गुणमां
तो नाम अने थापना बेउ सरखा छे.
जेम थापना बोलती नथी तो नाम प
ण बोलतुं नथी पण बेउमा पोतानी प
रीणती एटले पोतानो भाव थापीये तो
गुणमा बेउ सरखा छे तेवारे कोइ कहे
शे के अमेतो नाम, थापना, द्रव्य ए
त्रण निक्षेपा शुन्य मानीये छीए. गुण
विना नाम कोइनु अरिहत एवो थयो
तो तेथी शु थयु एटले नामथी कांइ

सिद्धी नथी. सिद्धीतो भावनिक्षेपाथीछे. नाम, थापना अने द्रव्यथी शुं थाय ते वारे तेने कहीये जे तमो भावथी सिद्धि कहोछो ते सत्यछे पण ते भाव, नाम, थापना, द्रव्य, जाण्या विना तमने केम थयो जे तमे एम कहोछो भावथी सिद्धिछे ते भाव शानोछे जे तमे सिद्धि कहोछो तेवारे ते कहे जे अरिहत नु स्वरूप आत्मामां विचारीए एवा आकारना अरिहतछे अने वीसथानका दिक तपकरणी करी अरिहंत थयाछे एम भाव आणीये तेवारे तेहने कहीए एहमां तो परथम तमे त्रण निक्षेपा कह्या केमके अरिहंतनु स्वरूप एटले अ

वी ए भाव आत्मामां थशे तेवारे भाव
निक्षेपानी जे वस्तु कही ते तत्व क
पोताना आत्मामा प्रणमशे माटे ए
ण निक्षेपाभाव निक्षेपाना कारणछे
न माने ते अरीहतना अवर्ण वादना
बोलनारो छे एहवु जाणवु

प्रश्न जे तमो त्रण निक्षेपाथी
व थाय एम कहोछो ते अमे ना नथ
कहेता एम तो अमे पण त्रण निक्षे
मानिएछीए पणअते तो भाव निक्षे
सिध्धिछे केमके जेम बालपणे ढीगल
ढींगली परणावेछे घर मांडेछे इत्या
क रमत रमेछे अने परणवादिक कृ
थी पोते संसारना सुख भोगववा

ोति जाणेछे पण जेवारे समजण आ
ो तेवारे रमत मुकीदे अने पोताने सा
ात स्त्रि मळे पछे ढीगळा ढीगळीनुं
ाम लेतो नथी, तेम निक्षेपा पण
ण जाणवा. जेम पहेली स्त्री ढीगली
ामे अने थापना वस्त्रादिकनी करेली
आगामीकाल थनारी स्त्रि द्रव्यस्त्रि
तेवारे ते साक्षात स्त्रि मळी तेवारे ते
त्रिम स्त्रिने मूकी भावस्त्रि परण्यो प
ो तेने शामाटे रमाडे तेम पोतानो आ
मा पोते भाव अरिहंतने जाणनारो
ाय पछी ए नाम थापना द्रव्यथी भाव
अरिहंत जाणी लीधा तो पछी एमने
ामाटे मानीए.

मानता. ए बोलवुं तमारुं गेरव्याजबी छे. जेम कोइनो अधिकार चालतो होय तेमां प्रसंगे वात आवे अने पछी न आवे तेनो शो दोष छे जेम आणंदजीने अधिकारे अर्थापतिए स्व चैत्य मानवा पूजवा राख्यां तथा मुनिने दान देतो विचरु ए राख्युं अने पछी सूत्रमां कोइ जग्याए जोव्या त्यां सुधि कोइ चैत्य पूजानो अधिकार तथा कोइ मुनिने दान देवानो अधिकार आव्यो नथी तो तेणे जन्मारामां पूजा दान नहीं कर्यो हशे अर्थात् कर्यो हशे. पण सूत्रमां लख्यो नथी तो शुं न मानीए? एटले मानवोज तथा कोइ श्राव

उत्तर. माहानिशिथमां आचार्योंए घालमेल करी ते तमारा मतने मल ती वात नहीं तेज घालमेल छे के बी जी पण छे? अने जो एमां घाल मेल करी तो बीजा सूत्रोमां केम न क री माटे तमो असत्य भाषण बोलोछो तथा तुंगिया नयरीना श्रावकोए कुल देव पूज्या ए कहेवुं तमारु विचार वि नानुं छे. केमके पूर्व सूत्रमां तेमणे च्या र निकायना देवनी सहायता धर्मथकी चलतां पण लेवी निषेधी तो संसार अर्थे तो लेज नहीं. तो तेमने बीजो कुलदेव कोण रह्यो. सहाय न वांच्छे तेवारे पुजातो केम करे.

के पूजी नथी ए आधारथी कहोछो. माहानिशीथ सूत्रमांतो श्रावकने पूजा नु फल बारमा देवलोकनुं कह्युं छे अने नगवतिजीमां तुगीआ नयरी प्रमुख ना श्रावक नाया कयवली कंमा एटले जीनराजनी प्रतिमा पूजिने नगवानने तथा थीवरोने वांदवा गया एम छे माटे श्रावके पूजा करी ए प्रतक्ष छे तेनी ना केम कहेवाय

प्रश्न माहानिशीथ सूत्रमातो आचार्योए घालमेल करी माटे अमे न मानीए अने नगवतिजीमा तो तुंगीया नयरीना श्रावके घरदेव कहेता जे कुल देव तेनी पूजा करी एम मानीए छीए

उत्तर. माहानिशिथमां आचार्योए घालमेल करी ते तमारा मतने मल ती वात नहीं तेज घालमेल छे के बी जी पण छे? अने जो एमां घाल मेल करी तो बीजा सूत्रोमां केम न क री माटे तमो असत्य भाषण बोलोछो तथा तुंगिया नयरीना श्रावकोए कुल देव पूज्या ए कहेवुं तमारु विचार वि नानुं छे. केमके पूर्वे सूत्रमां तेमणे च्या र निकायना देवनी सहायता धर्मथकी चलतां पण लेवी निषेधी तो संसार अर्थे तो लेज नहीं. तो तेमने बीजो कुलदेव कोण रह्यो. सहाय न वांछे तेवारे पुजातो केम करे.

प्रश्न. श्रावकने कुलदेव होय ते मं गलीकने अर्थे पूजे.

उत्तर. श्रावकोने तिर्थंकर देव शिवाय बीजो मगलीक शुं छे ते संसारीक व्य तरादिक मिथ्यात्वी देवने पूजे.

प्रश्न. समकिति कुलदेव होय तो पूजवानु शु अटके

उत्तर तेमने तरण तारण तो देव अरिहतज छे बीजा देव होय नही के मके च्यार निकायना देवनी सहायता वर्जी तो समकिति मिथ्याती वेहु आ वी गया.

प्रश्न. जे तमारे परपराए प्रतिक्रम णामां देवोना काउसग्ग थोइ उपद्रव्य

टालवा सारुं करोगे तो घरमां उपद्र
व्य टालवा ते देवोने पूजता हशे त्या
रेज आ परंपरा चाली आवेछे माटे कु
लदेव मांनवानो शो दोष छे?

उत्तर जे परंपरा तमे कहोछो ते पू
र्वेनी नथी ए परंपरा तो कारणे कोइ
आचार्ये नवी चलावी छे ते रुढीथी नि
त्य करवा लाग्या छे. ए तमे पण सम
जो छो के एमां दोप छे. ते रुढीथी नि
त्य करेछे परंतु आदिनी नथी. नित्य
करे ते जूल छे. पण बहु रुढीने निशेध
करी शके नहीं माटे चालेछे. अने घ
णा गच्छमां ए करता नथी. माटे श्राव
कने अरिहंत शिवाय वीजा देव नथी.

प्रश्न. जेम ए रुढीनी परंपरा तेम प्रतिमा स्थापवानी रुढी हशे तो कोण जाणे.

उत्तर. हे देवाणुप्रिया एम केम क होगे जे सूत्रमा प्रतिमा प्रत्यक्ष छे एने रुढी परपरा केम मानीए अने देवोना काउसग्ग थूइ एतो सर्व आचार्य पूजादि विशिष्टकारणे आचरणाइं करवी लखेछे एटले ए आचरणा नवी थइ एम छे पण प्रतिमाआश्रितो नवीथइ एहवु कोइपण लखता नथी. सूत्रमा लखेली तेने नवी थइ एम केम कहीए अष्टापदे श्री रिषभदेवस्वामीने वारे चैत्य कर्त्रिम थयां अने सास्वता चैत्य तो अनादीकाल

नां छे ते तमो मानोगे तो ए रुढी के
म कहीए माटे विचारवु जोइए.

प्रश्न. अष्टापद उपर देहरां कीया
सूत्रमां छे.

उत्तर. आवश्यकसूत्र निर्युक्तिमां छे
तथा उत्तराध्ययनमा देहरां अष्टापद
उपरे कह्यां छे. टीकामां

प्रश्न. आवश्यकतो गच्छ गच्छनो
जुदो जुदो ते केम मनाय अने टीका
तो अमे मानता नथी.

उत्तर. जे आवश्यक गच्छ गच्छनो
ते केम मनाय एम तमे कहोगे पण जे
आवश्यक चौद पूर्वधारी भद्रबाहु स्वा
मि तेमनो रचेलो ते तो सर्व गच्छमां

एकजछे वली तेनो निर्णय घणा आ चार्यथी थएलोछे वली अष्टापदे श्री गौतमस्वामी चैत्यवांदवा गया ते वात जुठी केम थाय.

प्रश्न गौतमस्वामी अष्टापदे गया एवु क्यांछे?

उत्तर भगवति सूत्रनी टीकामांछे.

प्रश्न. टीका तो अमे नही मानीए सूत्रमां होय तो देखामो

उत्तर. तमो टीका नही मानो त्यारे टवार्थ पण मानवामां केम आवशे. अ ने सूत्रमा संबंध तूटतो हशे तेने केम मानशो

प्रश्न ए कहोछो ते ठीकछे पण क

त्रिम वस्तुनो एटलो काल केम होय- जे कोमाकोमी सागरोपम सुधि रहे.

उत्तर. एवी शंका तमे विनासमज नी करोछो केमके एतो देवादिक प्रयो गथी रहेछे. पण कत्रिम वस्तु प्राये द श कोमाकोमीमां पण विणसे नही. जे जंबुद्विप पन्नतिमां वावमी वर्णवी तेके म रही. तथा रिषभकूटें चक्रवर्ति नाम लख्या ते केम रहे. तो एम जाणीए. ए कांइ एकांत नथी. जो कत्रिम न र हे एटले कत्रिम कोइ प्रयोगथी असं ख्यातो काल रहे तेनो दोष नही. जे सूत्रमां संख्यातो काल कहेछे. ते सा मान्य अपेक्षाछे, कोइक आश्री असं

ख्यातो कहीए तो दोप नही.

प्रश्न. जे तमो प्रतिमा विपे कहोगे पण ते प्रतिमामा गुणठाणु शुछे.

उत्तर. जे अमो प्रतिमा विपे कहीए छीए ते थापना निक्षेपो जे प्रमाण न करे ते मिथ्यातमां पडे. माटे तेहने अनुभव कराव्यो जोइए जे नाम अरिहंत अने थापना अरिहंत बन्ने सरिखा जाणे तेथी शुद्ध अनुभव थायछे अने जे तमे गुणठाणु पूछोगे तेतो प्रतिमां छे. पण सिद्धमां गुणठाणुं शुछे कही देखाडो त्यारे ते कहेजे सिद्धमा गुणठाणुं नथी त्यारे तेने कहीए जे गुणठाणा विना सिद्ध केम मानोछो.

प्रश्न. सिद्ध तो जीवछे अनतगुणी छे माटे मानीए.

उत्तर. ते अनंतगुण पोताना आत्मामांछे, माटे ते गुणनो प्रतिमामां आरोपण करी अनंतगुणी, ए प्रतिमा छे एम मानीए तो शो दोषछे, जेम नाममां गुणआरोपीए अने ते नामने सिद्ध करी मानीए तेम एपण मानीए. जेम नामना आलंबनथी पाप जाय छे. तेम थापना आलंबनथी पण पाप जायछे ए नाम थापना अरिहत जेवांज जाणवां.

प्रश्न. नाम थापना अरिहत सरिखा छे तो अरिहंत सर्व त्यागीछे, माटे तेमने सचित केम लगाडीए.

उत्तर. जेनो जेवो विनय होय तेने तेम करवुं तेमां शो दोषछे जेम नाममु खथी कहीए ते मुखादिकना अशुचि पुद्गल फरशे तोपण तेनी आशातना नथी तेम थापनानो विनय पूजादिक करता दोष नथी एतो थापना छे पण मुनि सर्व सचित्तना त्यागीछे तोपणका ल कर्या छतां मुनिनी कायाने भक्तिरागे करीने नवरावेछे तथा अग्निसंस्कार करेछे तेनो दोष सिद्धातमां सांभल्यो नथीतें काया साक्षातपणे द्रव्यगुरु छे कल्पस्थि तिए निर्जरानु कारण छे, तेम थापना निक्षेपाने कल्पस्थितिए श्रावकोने भ क्तिरागे करी सचित्तनो दोष गण्यो नथी

निर्जरानुं कारण छे.

प्रश्न. तमे सर्वे कहोछो ते ठीकछे पण प्रतिमा अजीव तेने देखी अरिहं तनो भाव केम आवे?

उत्तर. हे मानुभाव जेवी वस्तु देखीए तेवा भावनो परिणाम प्रतक्ष थाय छे दसवीकालीकमां जुवो के चित्रामण नी पूतली देखवाथी सराग थाय तथा जुध्धादिक देखवाथी सूरपणु थाय. तप स्वी देखवाथी तप अनुमोदना थाय. सर्प जाणी दोरडी उपर द्वेषभाव आवे. पुत्रादिकना उपगरण देखवाथी पुत्र नो मोह उपजे. ए माटे भगवतिजीमां जमालीनी माताए केश संग्रही राख्या

एम अनेक अजीव द्रव्यथी वैराग्य त
था सराग पाम्या देखायछे तो प्रति
मां देखवाथी वीतरागनो आरोपण के
म न थाय

प्रश्न सत्यछे आरोपण थायछे पण
एम तो ध्वजा जोइने पण वैराग्य प
मे तो ते ध्वजा शु पूजवा योग्य थइ

उत्तर ते ध्वजा इंद्रध्वजाना गुण
ज्या सुधि तेमां आरोपण छे त्यां सुधि
ते पण पूजाय छे पण ध्वजामां जे गु
ण आरोपण छे ते गुण वैराग्यवत न
थ` ते थकी विपरीत देखी वैराग्य थ
य छे ते माटे ते चीज निरगुणी छे अ
ने थापना तो गुणवत स्वामी जे होय

तेहनी थायछे अने गुणवंत स्वामीनुं स्मरण पण तेज करावे छे. एमां बीजा गुण आरोपण थता नथी. माटे पूज नीक छे तथा तिर्थंकरादिक जे वृक्षो नीचे बेठेला ते वृक्षने पण धन्य छे ते म केहेवाय छे. तो तेना स्वरूपनी मू र्ति पूजाय तेमां शो वांधो छे माटे नाम अरिहंत अने थापना अरिहंत ते भर्त क्षेत्र तथा ऐरवर्तक्षेत्रमां विद्यमान छे.

प्रश्न. विद्यमान छे तो हवे अरिहं त देव अमे कोने मानीए?

उत्तर नाम अने थापना ए बे अ रिहंत भर्तमां विद्यमान अने द्रव्य अ रिहंत तथा भाव अरिहंत माहाविदेह

मां छे एवा चार निक्षेपे सहित अरिह
त तत्वने मानवो अने बीजा हरि हरा
दिक चार निकायना देव तेमने संसा
री जाणी तरण तारण मानवा नहीं
एहवो निश्चय आत्मामां थाय तेवारे ए
प्रथम तत्व सरदह्यो कहीए इति प्रथ
म तत्व संपूर्ण

तत्व बीजो

हवे बीजो तत्व सुगुरुनो ते सुगु
रु बाज्य अभ्यतर ग्रथी करीने रहित
ते निग्रथ कहीए तेमने गुरु करी सरद
हवा हवे ते निग्रंथनो वर्णव करीए छीए
पंच महावृत धारी तिहा प्रथम महाव्र
तें सर्व प्रकारे जीव मारवानो त्रण व

रण त्रण जोगे करीने त्याग ए प्रथम महाव्रत पण लोकीकमां जेम कोइने थाप मारी ते प्राणातिपात नथी एम जाणेछे पण साधुने तो ए पण प्राणातिपात छे. ए पहेलु माहाव्रत हवे सर्व प्रकारे जुठ बोलवानो त्याग ते बीजुं महाव्रत पण लोकीकमां तो जेम कोइ गृहस्थ आव्यो तेहने बीजो गृहस्थ कहे जे आवो इहां बेसो अथवा हमणां जावो फरीने आवजो एम कहे तेने साच मानेछे कोइ जुठ मानता नथी पण साधु पुर्वे कह्युं तेम गृहस्थने कहे तो जूठ लागे केमके सावद्य छे माटे एहवुं जूठुं पण न बोले सर्व मृ

घुल प्रमुखनी साधुने खप पड़े तो अ
णुजाणह जसुगहो एम कहीने लेवे.
झाड़ हेठे बेसे तो झाड़नी आज्ञा ली
ये तो चोरी न लागे. तथा लोकमां तो
दीकरो पिताने पूछ्या विना खायछे तो
पण तेहने चोर नथी केहेता पण साधु
तो गुरुने पूछ्या विना, आहार देखा
ड्या विना खाय तो चोर कहीए तथा
गृहस्थ पासेथी सूइ मागी लाव्यो जे
हु कांटो काढीस. पछि ते सूइथी कपडो
पातरो सिवे तो चोर केहेवाय तथा ती
र्थंकरे कह्यो जे साधु गृहस्थ पासे का
म करावे ते दंड पावे. तेम छता जो
गृहस्थ पासे काम करावे तो ते साधु

चोर कहेवाय तीर्थकर अदत्त माटे, ए सर्व प्रकारे अदत्तादाननो त्याग ए त्रीजु महाव्रत ३ चोथुं महाव्रत सर्व प्रकारे अब्रह्म एटले मैथुन तेहनो त्याग त्रण करण त्रण जोगे करी सर्व प्रकारे कहेवाथी पण लोकीकमा तो एहवां कार्य करे तेहने मैथुन नथी गणता. ते कहेछे स्नान करे हाथ मुख धोवे दातण करे पग धोवे वस्त्र धोवे रंगे हजामत करावे नख रूमा करावे तथा रग लगाम्हे मसी लगाम्हे तिलक करे घराणु पहेरे केस समारे वस्त्रने धुप लगाम्हे आखे काजल सुरमो आजे इत्यादिक कारण करे तो तेहने मैथुन सेव

ारो कहीएं ए मैथननां अंग छे माटे तथा जे स्त्रिआदिनां रुप निरखे छो फराने मोढे हाथ फेरवे. चुंबन करे ए या कारण तो लोकोमे प्रसिद्ध मैथुनज छे. तथा हस्तकर्मादिक करे तेल फुले ज लगाम्हे ते तो सबल दोपने पामे माटे सर्व प्रकारे मैथुन त्याग कर्यो ते हने पूर्वोक्त दोष लगाम्हे तो दम्म पांमे श्री निशीथ सूत्रमां कह्युं छे के जे सो लाने अर्थे पोताना केस ऊपर हाथ फे रवे तो ते अनाचारी दंम्मने पांमे भला भोजन करे घणो जर जरतो आहार करे स्त्रीछमां वेसीने कथा करे संसारि क वातो करे तो ते साधु ब्रह्मचर्यनो

नास करे तेवु उतराध्ययन प्रमुख सूत्र
मां कह्युं छे ए पूर्वोक्त दोष रहीत जे
चोथो महाव्रत धारे ते निग्रथ जाणवा
ए चोथु महाव्रत ४ हवे पाचमु महाव्र
त ए सर्व प्रकारे परिग्रहनो त्याग करे
ते परिग्रह धन धान्यादिक नव प्रकारे
छे तथा लोकीकमा तो जे उपगरण ते
प्रमाण उपरात राखे तथा अण पमी
लेहा राखे तो तेहने परीग्रह गणता
नथी पण ते सिद्धांतऽभिप्राये परिग्रह
छे तेमा चउदे उपगरणना प्रमाण एम
छे अल्पमुलां वस्त्र त्रण तेमा वेतो सु
तरना ने च्यार हाथ लावा अने अढी
हाथ पहोला ए प्रमाणे एक कांवली

र त्रण उपगरण तथा चोलपट्टो ते एक
हाथनो पहोलो तथा च्यार हाथनो लां
बो तथा पोतानी केम्रथी वमणो ते ढुं
टीना हेठल च्यार आंगल अने ढीच
णना उपर च्यार आंगल रहे तेवो ए
च्यार उपगरण मुहपत्ती तिरछी मुखे बं
धाय एवी कारणे करकटीए वांधे तेटली
चोखुणी ए पांचमो उपगरण रजोहरण
ते चोवीस आंगलनी दांमी आठ आंग
लनी दशी तथा एक आंगलनी दशी
उंची तो दामी लावी अने दांमी लां
बी तो दशी उंची ते उनना वस्त्रना दां
मीने त्रण आंटा आवे एटले वस्त्रने त्रे
गी सीवेली ते उपर एक वस्त्र सुतरनो

ते वीटीने दोरीए वांधेलो ते ऊपर का
मलीनो कटको एक हाथनो वीटी राखे
पण दोरमीथी बाधे नहीं ते कांमली
नो कटको पाथरवानो छे ए सर्व मली
रजोहरण ऊपगरण छठो थयो नदीपात्र
सातमो पातरा त्रणनो एक ऊपगरण
ए आठमो पातरा बाधवानी झोली ए
नव पातरा मूकवानो कावलनो कटको
ए दस पातरा पूजवानी एक वेंत प्रमा
णे पूजणी ए अगीआरमो पम्ला सा
त तेमा चोमासामां सात सियाले छ
अने ऊनाले पाच तथा पाच चोमासे
च्यार शीयाले त्रण ऊनाले ते बत्रीस
आगलना पहोला अने अढीहाथना

लांबा ए बारमो उपगरण पातरां वींट
वानो रजत्राण ए तेरमो गुच्छा सर्व पा
त्र उपर ऊनना कटकाना वे ए चउदमो
ए चउद उपगरण गृहस्थना छता न
वावरे, वावारीने पाछां न आपे अने
दांडो. दंडासणो, सथारीओ, पाटपाट
ला, मात्रानुपात्र, बांधवानो पम्दो,
पाणी गलवानु गरणुं तथा कातर सुइ
प्रमुख मांगी लावे ते पाछां पण आपे
तथा आचार्यादिक अधिक उपगरण ग
च्छनिर्वाह अर्थे राखे ते पोते साधु
जालवे पण वावरे नही ए उपगरणनी
मर्यादा उपरांत राखे तथा कोइ गृ
हस्थीने नलावे तथा गृहस्थी पासे उ

पमावे तो परिग्रह धारी समजवो ते
ने निग्रथ बुध्दिए न जाणवो ए पाचमो
परिग्रह त्याग, महाव्रत ५ ए गुण नि
ग्रथना बाह्यछे ने अभ्यतर तो क्रोधा
दिक मीथ्यात्व जेणे छोड्यो होय तेने
निग्रथ कहीए ए केवली गम्यछे छठो
व्रत रात्री भोजननो ते सर्व थकी रा
त्रीभोजननो त्याग ए पण लोकोमा तो
रातना च्यार अहार खाय तेने रात्री
भोजन करनारो कहेछे पण साधु तो
जो रात्रीनो वहोरी लावेलो अहारादि
वसे खाय तो रात्री भोजन, दिवसे व
होरी लावेलो अहार रात्रे राखीने बी
जे दिवसे खाय तो रात्री भोजन क

य, रात्रीनो लाव्यो रात्री खाय तो
त्री भोजन दिवसे लाव्यो रात्रे खा
तो रात्री भोजन ए सर्वे प्रकारे रा
ी भोजन वरजे ते निग्रथ जाणवा त
ा पुस्तकादिक पोताना नामना पण
ाहस्थने न आपे जे हुं वलतो लइज
श तथा तारे घेर राखजे इत्यादिक
करे ते परिग्रह धारी तथा इरजा सुम
ते ते भूमि जोइने चाले, भाषा सुम
ति ते सावध्य वचन न बोले, गृहस्थने
आवो, जाओ न कहे, उघाडे मुखे न
बोले एषणासमिती ते बेंतालीश दो
प टाली आहार लेवे, पांच दोष टाली
आहार भोगवे एम वस्त्रपात्र वस्ती सर्व

वेताली दोष टाली लीए आदानभंम निक्षेवणा समिती भूमि पूंजीने उपगर ण ग्रहवे, मुके समासा पमीलेही वेसे पारिठावणीआ समिती उच्चा मात्रा प्र मुख एकाते निर्जीव स्थानके परठे ए ना एकहजारनेचोवीस भांगा एमांअं तनो एक भागो शुद्धे, जाजरुमां ठले न जाय, कारणे ठेकाणे सका टालीने परठे, मनने गोपवी राखे, वचन गोप वी राखे, काया गोपवी राखे, पांच इं द्रि जीते गृहस्थ पासे शरीर मसलावे चपावे नही इत्यादिक कारणे जे दोष लागे ते निशीथ सूत्रमां जे दंम कह्यो ते गुरु द्रव्यक्षेत्र कालभाव जोइ आपे

ते लीए ते निग्रंथ जाणवा. सरधा शुद्ध लींग शुद्ध, स्वेत मानो पेत वस्त्रधारी वेहुकाल पमीक्रमणु करे, पचवीस प्रकारे पमीलेहणा करे, साज सवारे सात चइत्यवंदन करे, च्यारवार सजाय करे, ऊपाशरे पेसतां नीसरतां आवसही, निसिही कहे, जत्र, मंत्र, जमी, बूटी, जोतक, वेदक करे नही निराशी भावे रहे एवा निग्रंथते तरण तारण गुरु जाणवा.

प्रश्न. पूर्वे कह्या एवा निग्रंथ हमणाना कालमा तो क्यांही जोवामां आवता नथी.

उत्तर. क्यांही जोवामां आवता न

थी ते तमो शा आधारथी कहोगो ? त
मे नथी दीठा तेथी कहोगो के कोइए
नथी दीठा तेथी कहोगो ? तमे नथी दी
ठा तेहथी तो सर्वथा निषेध नहोय
कोइए नथी दीठा ए पण जूठछे केमके
पांचमा आराना अत सुधी तीर्थ कह्यु
छे ते तीर्थमा साधु पण आव्या

प्रश्न तमे उपर लख्या प्रमाणे क
होगो ते ठीकछे पण आ क्षेत्रमा कोइ
निग्रथ होय तो देखाडो ?

उत्तर जे पूर्वोक्त व्यवहारथी अमे
निग्रथ देखीए छीए. तमो कहोगो जे
देखाडो ते तमने देखाडीए पण तमे
सरधा विना मानशो नही तेहनु शुं क

हीए ? जेम केवलीने शाक्षात देखाड्या तोपण पाखंमीए मान्या नहीं तेनो शो उपाय तेम जे संशय मिथ्यातमां पड्ये लाने जे व्यरहारे साधु देखाम्हीए तोपण ते शकाएं न माने अने कहे जे सूत्रमां कहेला ते प्रमाणे नथी कालदोपथी तेनो कांइ दोप देखीने ते दोपनुं नाम लइ निषेधे जे आतो बरोबर इरिआसुमति पण जोतो नथी पण ते शंशयवालो एम न विचारे जे वकुश मां तो दोप होयज पण जे दोप लगाम्वानो कामी नथी, आलोयणा लेवानो कामी छे. पुष्टालंवन माटे दोष लागे छे तो ए केम साधु नथी भगवती

मां एवो निर्णय करी देखाड्यो छे. ग
मर्म ने शब्द क्रियापदना ज्ञान स
टे तेहना परमार्थी साधु नथी गम न
पडीए, तोइ पण परंपर सूत्रोनां गीता
र्थ गयो नथी माटे गीतार्थ विना साधु
तेम नवी तेहने उत्तर गीतार्थ कही
नथी पण तेम करोतो गीत कहेता सू
त्र तेहना अर्थ जाणे ते गीतार्थ ते नः
शास्त्रमा अर्थ करनार छे.

प्रश्न. परंपरा गीतार्थ कहो नथी
माटे अर्थ करनार ते पण केम कहिये.

उत्तर. जे परंपरा गीतार्थ नथी पण
कहोछो ते पण विचार विनानु कहेवु
छे केमके सुधर्मास्वामीने सूत्रथी आ

त्मागम अर्थथी अनंतरागम तेना शी
ष्य सूत्रथी अनंतरागम अने अर्थथी
परंपरागम तेवार पछी सुत्रार्थ वेहुं परं
परागम ते चउद पूरवधारी श्री नद्र
बाहुस्वामी थया तेमणे सूत्र ऊपर सूक्ष्म
अर्थ रूप निर्युक्ति बनावी पछी परंपरा
अर्थ चालतो आव्यो ते अर्थ नाप्य
चूरणी टीकामां पूर्वाचार्योए लखी मु
क्यो ते अर्थ हमणां वर्त्तमान छे कोइ
सूक्ष्म अर्थ जाणवामां न आवे तो ज्ञा
नीनो ज्ञान अनंत छे एहथी कांइ गी
तार्थपणानी हाणी नथी माटे परंपरा
गीतार्थ नथी एम न समजवुं
प्रश्न आनंदघनजी तो पुरुष परं

पर अनुभव जोवतां अधो अध पला
य एम कह्यु छे तो परंपरा क्या रही?
उत्तर एहथी परपरा नही एम न
समजवु केमके एमनु कहेवु गच्छ आ
श्री छे जे गच्छ एहवो कोइ देखातो
नथी के जेहनी परपरा पाटो पाट चा
ली आवी सर्व गच्छ पोत पोताने मते
छे जो एम न मानीए तो एमनु कहे
वुं एम केवी रीते मनाय? जे सूत्र अ
नुसार भविक क्रिया करे तेहनो शुद्ध
चारित्र परखो ए कहेवाथी तो सूत्र पर
परा पचांगी तो एहुए प्रमाण करी
ए परतक्ष दीसेछे पण गच्छ देखता सू
वात न रहे माटे एम बोल्या सं

नवेछे सर्वथा परंपरा निषेध संभवे नहीं.

प्रश्न जे परंपरा निषेध नहीं एम कहो तो टीकाकार पण घणे ठेकाणे ल खेछे जे सम्यक संप्रदायना अभावथी एहनो अर्थ बहुश्रुत गम्य छे तथा की हांइ लखेछे जे अमो चूरणिकारनो त था पूर्व टीकाकारनो अभिप्राय जाण्यो नथी तो परंपरा केम रही?

उत्तर. ए कहोछो ते खरुं छे पण जे प्रत्यक्ष अर्थ समजवामां आव्यो खुला सो टीकाकारे लख्यो ते तो परंपरा अ र्थ खरो छे तो जेटली परंपरा रही ते तो खरीज मानवी जोइएं ते प्रमाणे क्रि या व्यवहार करे ते साधु केम न कहे

वाय ? पाचमा आराने छेमेतो एटली
परपरा पण नहीं रहे तोपण तेमने भ
गवते आराधक कह्या छे माटे परपर
गीतार्थ नथी एम न कहीएं.

प्रश्न परपरातो छे पण एवो कोइ
दीसतो नथी जे परंपराए चाले अने
परूपे हमणांतो पचागी थकी घणा वि
परीत चालेछे अने भगवंते पण कह्यु जे
हे गौतम मुजथी वारसेने पचासथी कां
इक अधीक वरस सूधी भाव परपरा
रहेशे पछे पासत्था कुगुरु घणा थशे ए
म महानिशीथमां तथा अगचूलीअ
मा कह्यु जे घणा पोताना मतें दीक
लेशे अने मत चलावशे गुरुनी आ

ज्ञामां चालशे नहीं तथा व्यवहारचूली यामां कह्युं चैत्यद्रव्य प्रतिष्टादिक अविधि मारगमां पमशे मालारोपणादिक करशे तो पूर्वोक्त गुणधारी साधु क्यां रह्या?

उत्तर. तमो कहोगे जे कोइ गीतार्थ नथी परंपराठे पण कोइ दीसतो नथी ए बोलवुं तो वांझणी पुत्रना विवाह जेवुंठे केमके कोइ दीसतो नथी त्यां परपराठे एवु केम संभवे! तथा महानिशीथ प्रमुखमां कहेठे जे पासत्थादिक कुगुरू व्यापशे ते खरो पण त्यां एम कह्युंठे एकांते सर्व नही ने जे शुद्ध मार्गना परुपनारा हशे तेमने ते नींदशे ए

कहेवाथी तो परंपरामां पण शुद्ध मा
धु रह्या तथा जगवतीजीमां कह्यु हे
गौतम माहरुं शासन एकवीस हजार
वर्ष चालशे एकहजार वर्ष माहरापछी
पूर्व विछेद जशे ए कहेवाथी पण ज
णायछे के साधु परपराए छे साधु वि
ना शासन होय नहीं माटे परपरा अ
वस्य रही एम जाणवु कोइ कहे मही
वीरस्वामी पछी बारडकाली पमी तेमां
साधु विछेद गया अने चइत्यवाशी
ह्या पछी सवत १५ मा दयाधर्म प्रग
ट्यो एम बोले ते पण जूठछे केमके ब
रडकाली एक तो बद्रबाहु स्वामीनं
वखते पमी तीहां तो थुलीभद्र प्रमुख

महागीतार्थ विचरथ्या लखेछे अने चऊद पूर्वधारी छे तो साधु केम विछेद गया कहीए. तथा बीजी बारडकाली वज्र स्वामीनी वारे पण एमां दस पूर्व विचरता कह्या तथा एक हजार वर्ष सुधी पूर्व रहेछे तो साधु विना दृष्टीवाद बीजा पासे होय नही अने जो कदी तमो कहेशो के ढीला पासे पूर्वनी विद्या रही तो एतो सर्वथा खोटो थयो ढीलाना लखेला सर्व पुस्तक ते अज्ञानरुप थया ढीलो कोइ विपरीत लखे तेमां शो विश्वास जो कहेशो के कोइक शुद्ध हशे तो तमो विछेद गया केम कहोछो परंपरा तो रही. जो कहेशो के

चैत्यनी प्रतीष्टा चलावी तेथी ढीलाए
चैत्य अधीकार सूत्रमा घाल्यो तो अ
मे पुछीए के वीजो अधिकार ढीलाए
सूत्रमा केम न घाल्यो माटे ए वोलवुं
युक्त नथी ए कहेवाथी तो सर्व गच्छम
त जूठा पडे अने ढीलाना लखेला सू
त्र प्रमाण नहोय माटे सूत्रना लखना
रा शुद्ध चारित्री आ परपरामा समज
वा सवत पनरानी सालमां दयाधर्म
प्रगट्यो ते जूठछे

प्रश्न परपराए सूत्र गीतार्थ ते
मानीए छीए पण जे नवा नवा गच्छ नी
कल्या तो परपरा क्या रही ?

उत्तर जे गच्छादिक नवा नीकल्य

ते ठीक पण सूत्र परंपरा तो साची छे तो सूत्र परंपरा प्रमाणे जेप गच्छ हो य ते परंपराए मानतां शो विचारछे.

प्रश्न. जे गुरु पासथ्था तेहना चेला तेमने केम साधु मानीए?

उत्तर. वे त्रण पाट परंपरा पासथ्था ना चेला उग्रविहारी होय ते मानवा नो दोप नहीं. महानिशीथमां कह्युं छे तथा महानिशीथमां कमलप्रभा आ चार्य पण एमज नीकल्या तेमनी परं परामां बहु कालनो कुशील हतो तोप ण कुशील मूक्या पछी तेमने मुनि मान्याछे.

प्रश्न. जेप पूर्वे स्वेत मानो पेत व

तेहने भेषनो कुत्सिपणोछे तेथी भेषथी
साधर्मी न मनाय पण क्रिया रूमी कर
वाथी साधुपणामा केम न मनाय अर्थी
त मनायज एम सर्व जाणी लेवा अ
ने जे प्रतीमा न माने, मुखे मुहपत्ति
बांधे तेहने तो भेष अने सरधा बेहु
खोटी तेने द्रव्ये साधु न कहेवाय अने
जे व्यंतरादिक समकिती देवने विघ्न
निवारवा कारणे मानेछे अने तरण त
रण मानता नथी एहवी जेहनी स
धा छे शुद्ध परुपे छे, शुद्ध क्रिया करे
एटले कारण विना समकिती देवा
कनी साह्य लेता नथी अने प्रस
दोष जाणेछे ए वात प्रतिक्रमण दी

कामांछे तो एटला दोष माटे साधुपणो
सर्वथा नथी एम केम कहीए तथा कु
देवने पूजवानो निरंतर व्यवहार ते
श्रावकने होय नही पण जे कुलदेव को
इने असाता करतो होय तो तेहने श्रा
क पोते सहन करी शके नही तो ते
हने बाहीरवृत्तीए माने एमां पण प्रसंग
दोष छे एकांते तिर्थंकर प्रतिमा विना
श्रावकोने कुलदेवनी पूजा करवी थापे
तेमां तो सम्यक्त जाएयो नथी पणसामा
न्ये सर्वमां साधुपणु नहीं एम न कहेवाय

प्रश्न. उपरथी तो रूडा दीशे पण
भावमां तो कोण जाणे केवा छे माटे भा
व जाएया विना साधु केम मानीए?

नी मतलवे नमे छे तरण तारण जाणी न नमता नथी माटे, अने लोकलज्जाए पण न नमे तो उतकृष्ट जाणवा अने जे कोइ एम कहे के हमणां समकीतनु पण ठेकाणु नथी तो साधु क्यां छे एम बोले तेहने तो भाष्यकार संघ बहार काढवानी आज्ञा आपे छे केमके जैनशासननो उच्छापक छे माटे एम न कहेवु जे हमणा साधु नथी वर्तमानमां बकुस कुशील चारीत्रीया कह्या ते प्रमाण करीने गुरुतत्त्व सरदहवो.

प्रश्न जे नित्ये जाणीने दोष लगाडे तेने गुरु मानीए के नहीं?

उत्तर जे नित्ये जाणीने दोष लग

हे तेने गुरु न सरदहीए अने जेहने कारणे तथा अजाणमां दोप लागे ने आलोयणनो कामी होय तेने साधु मानीए केमके ए दुष्ट परीणामी नथी माटे साधु छे ए बीजो तत्व जाणवो इति गुरुतत्व

तत्व त्रीजो

शुद्ध धर्म जे दुर्गती पडताने धारे ते धर्म दया मुल ते पण केवली भाषीत तेने धर्म करी मानवो ते धर्मनी बाह्य करणी एम छे के मिथ्यात्वनो त्याग करवो जीव न हणवो जूठ न बोलवुं चोरी न करवी, स्त्री न सेववी परीग्रह मुर्छा न राखवी, सुपात्र दान दे

नु, अनुकपा राखवी, व्रत, पचखाण करवा, नवकारशी प्रमुख तप करवु, नावना नाववी जे हे जीव तु हजु सुधी मुर्च्छा नथी मूकतो जे धन्यछे जे ओए ससार त्याग करी सजम धार्यो धन्यछे आणदादिक दश श्रावकोने ते सम्यक्त मुल वारव्रत धारया अने देवा दिना उपसर्गथी नय न पाम्या कोइनो सहायन वाछ्यो, महावीर स्वामीए तेमने वखाण्या प्रसस्या तेओना द्रष्टाते साधुओने द्रढ कर्या तथा चपानगरीनो वासी अरहनक श्रावक एकदासमे सर्व सजता वाणिआ एटले जे परदेश जइ वणज करे ते सजता वाणि

आ जाणवा तेओनी साथे अरहंनक श्रावक गामांमां माल भरी गंभीर पोय पट्टण नामा नगरे आव्यो. त्यां गामां खाली करीने वहाण भर्यां समुद्रमां खावा सारु चोखा, घृत, गोल प्रमुख भरी ते समुद्रने बलीदान करीने वहाण चलाव्या ते वहाण सेकडो जोजन समुद्रमा आव्यां एटलामां अकाले मेघ गाज्यो, विजली थइ, महाशब्द थयो वारंवार आकाशमां देव नाचवा लाग्या तेमां एक मोटो पिसाचनो रूप ते महा बीहामणो, ताम्र जेवुं जीभ कहाडतो थको हाथे चपेटा देतो थको अट्टहास्य करतो थको तीखी तरवार ल

इने आवतो थको ते वाणिआओ दी
ठे ते वारे ते बधा वाणिआ बीन्या ए
क अरहंनक श्रावक बीन्यो नही ते पि
साचनो वर्णन बहु नयानक ठे ते पि
साचना रुपने आवतो देखी ते सजता
वाणिआ नयने पामता थका माहोमा
हे पेसता थका बहु इन्द्रदेव, खदकदेव,
रुद्रदेव, शीवदेव, वेशमणा नागदेव,
नूत, जक्क प्रमुखने पूजी, वली प्रमुख
करी पूजीने सतुष्ट करता रहे ठे एव
धु बीजा वाणिआनु कृत कह्यु हवे अ
रहनक श्रावक ते दिव्य पिसाच रूपने
आवतो देखीने बीनो नही त्रास पण
प्राम्यो नही दीन पण न थयो कोइने

याद पण न करे पोते वहाणना एकखु
णामां वस्त्र थकी जग्या पूंजीने वेसे. हा
थ जोमीने नमुथ्थुणं कहीने बोले जे ए
उपसर्ग न टले त्यां सूधी, माहरे च्यार
ग्र्रहारना पच्चखाण वे ए पच्चखाण मारे
पारवा कल्पे नही तेवारे ते पिसाच रू
प ज्यां ग्र्र्हंनक श्रावकवे त्यां ग्र्राव्यो
ग्र्रने कहेवा लाग्यो ग्र्रे ग्र्र्हंनक ग्र्रण
खूटे मरनारा नही कल्पे तुजने शीयल
पालवो पोपा प्रमुखमां रहेवुं जो तुं
शीयल व्रत नहीं गेमीश तो हुं ग्र्रा व
हाणने बे ग्र्रांगलीए उपामी सात ग्र्रा
ठ ताम प्रमाण उचो ग्र्राकाशे लइ जइ
ने पाणीमा बोळीश जेणेकरीने तु ग्र्रा

रतध्याने काल करीश अकाले मरीश तेवारे अर्हनक श्रावक जीवाजीवनो जाणनार निश्चे मुझने अरिहत धर्मथी चलाववाने कोइ समर्थ नथी तारी खुशी आवे तेम कर एम विचारी लगार पण भय नहीं पाम्यो दीन पण न थयो, मौन करी धर्म ध्यानमा विचरे. वली पिसाच बे त्रणवार कहे पण अर्हनक चल्यो नहीं तेवारे पिसाच थाक्यां धीरे धीरे ते वहाणने उतारीने जल उपर मुकीने ते पिसाचनु रूप गोपीने दिव्य देवरुपी थइने आकाशमा रह्यो थको एम कहेछे के हे अर्हनक तुने धयन्यछे तारु जीवत्वुं सफल छे जो

तुजने एवो अरिहंत धर्म उपर निश्चय पणो छे हे देवाणुपिया तुझने सक्रइन्द्रे वखाण्यो ते मुझने सरदहवामां न आव्यो तथा हुं तारी परिक्षा करवा आव्यो तो हवे जाण्युं जे इन्द्रे कह्यु ते सत्यछे तुमे मारा उपसर्गथी भय नथी पाम्या. हे देवाणुप्रिय आ हवे तमारो दृढपणो दीठो तुझने खमावुछु एम कही पगे लाग्यो वे कुंभलनी जोभी आपीने पोताने स्थानकें गयो. अर्हंनके पच्चखाण पार्यो अहीआं एम भावना भावीए जे एहवा दृढ श्रावक जे कष्टमा पण बीजानो शरण न वांछे ते धन्यछे तथा श्री जिनराजनी पूजा करे. जात्रा वे

प्रकारनी तीर्थ जात्रा, रथजात्रा, स्वा
मीवछल, प्रभावना, धर्म अन्यतीना का
रण मुनीवादवा जाय, पुस्तक लखावे,
इत्यादिक धर्मना कृत्य जाणवा ए देश
थी सर्वथा साचवे

प्रश्न जे तमो पूजा, जात्रा, स्वामी
वछल ए धर्मनां कृत्य कहोगे पण ए
धर्मना कृत्य केम कहीए? एतो हींसा
ना कृत्य छे एमा धर्म केम मानीए?

उत्तर सूत्रोमा तो एहने धर्म कृत्य
कह्या पूजा प्रमुख धर्मना कृत्य हित सु
खकारी आगामी काले कल्याणकारी
मोक्षकारी रायपसेणी प्रमुखमा कह्या
ज्ञात्रा प्रमुखमा महा आम्बरे वांदवा

ाया तेहुंने धम्माणु रागरत्ता कह्या त
या रथोने पण धर्मरथ कही वतलाव्या
स्वामीवच्छलने पोताना स्वामीभइने
उपस्थंभ देतो सम्यक्त निरमल करे एह
वुं सूत्रमा छे तो हींसा कृत्य केम कहीएं.
प्रश्न छकायना आरंभ करे ते मंद
बुधीआ एम प्रश्न व्याकरणमा छे एथी
जाणीए पूजादिक कृत्य हींसानां छे.
उत्तर. तमारूं कहेवुं केवुं छे के पोता
ने हाथे पोताने पगे कुहाडो मारवा जे
वुं छे केमके जे प्रश्न व्याकरण सूत्रमां
हिंसा कृत्य कह्या ते वधा मिथ्या द्रष्टी
आश्रइने छे अने तमे समकितीने स
मजो छो तो जे तमो छकायना आरंभ

ना काम करो छो जग्याओ वधावो छो दीकरा परणावो छो ते नित्य छकायनो आरम्भ थायछे अने नाम श्रावक धरा वोछो तो हवे विचारो जे प्रश्नव्याकरण ना न्यायथी तमने दक्षिणदीशानी नर्क विना कयु ठेकाणु छे? जो कहेशो के अमारे श्रावकपणु छे तेथी न जइए तो सूत्रनु कहेवु दक्षिणदीशा नर्क जवानु ते केहने आश्रि समजवु चारु?

प्रश्न जे अमे आरम्भ करीए छीए ते ससारखाते करीए छीए धर्म अर्थे नथी करता माटे जे धर्म अर्थे आरम्भ करे ते नर्के जाय?

उत्तर जे तमो धर्म अर्थे नथी क

ता तोपण सूत्रमां तो धर्म अर्थे, तथा धन अर्थे, तथा सुख भोगववाने अर्थे हींसा करे ते नर्के जाय एम कह्युं छे तो तमो संसार अर्थे करो तोपण नर्कना अधीकारी थया अने जो कहोछो के धर्म अर्थे नथी करता एतो तमे असत्य बोलोछो केमके साधुजीने वादवाने जावोछो ते शु साधुजीने वांदवानु ससार अर्थ मानोछो के धर्म अर्थ मानोछो? जो संसार अर्थे मानोतो तमे भूलोछो प्रत्यक्ष साधुने वांदवा जाय साधुने दान देवा उभो थइ चाले इत्यादिकने तो धर्म कृत्यमा गण्युं छे तमे पण साधु वांदवानु, दान देवानं धर्म मानोछो तो

ससारमा केम गणीए.

प्रश्न अमो साधुने वादवानो ला भ मानीए अने हींसाने संसारखाते गणीए.

उत्तर तमो गुरुने वदन करवां जता आवता ससारखाते मानोगे तो जता आवता ते समे काल करे तो आराधक के विराधक जो विराधक कहेशो तो वादवा जवुं न जोइए ने आराधक कहेशो तो धर्मपक्षमा गणवी पड शे अने जो वदनक्रिया धर्मपक्षमां गणशो तो पूजा मानवी सत्य थइ पूजा, यात्रादिक पण धर्मखाते मानो

प्रश्न तमो तो हींसाने धर्म मानोगो!

उत्तर अमो हींसाने त्रण कालमां पण धर्म मानता नथी धर्मना कारण मां हींसा तेहनो शुद्ध भाव माटे निवड़ बंध नथी मानता अल्प दोष बहु निर्जरा मानीए छीए, परमारथमां तो तमो पण एमज कहो छो पण तमारे अरिहंत पूजवाना अंतरायनो उदय छे. माटे पूजाने हींसा एकली मानो छो अने भावनाना कारणने तमो मानता छतां जे धर्मनि उन्नती करे तेहने तमे पण निर्जरा मानो छो तथा साधुने वांदवा जवामां धर्म समजो छो पण पूजा उपरे तमने मतनी जड़छे ते मूकीने विचारो तो सर्व पांसरुं समजवामा आवशे

प्रश्न अमो तो हिंसा तीहा धर्म न
हीं अने धर्म तीहा हिंसा नही एम
मानीए छीए

उत्तर एम तो अमे पण मानीए
छीए एमा तमे शु अधिक कहोछो

प्रश्न तमो तो हिंसा विना धर्म न
थी मानता केमके स्नान कर्या विना पू
जा न थाय एम कहोछो ते माटे एतो
हिंसा कर्या विना धर्म न थाय तेम थयु

उत्तर हिंसा विना धर्म नथी एम
तो अमे नथी कहेता तमे कहेताहो तो
भले अने तमे कहो छो जे पूजा स्नान
विना नथाय एतो विधी मार्गे कहीए
छीए ते तमो पण कहोछो के उत्नाथइ

सातआठ पगला साधुने सामा जइने त्रण प्रदक्षिणा दइने वांदे तथा अहार वहोराववानु मोटुं फल एम कहोछो तो कठे वेसे तीहां पण हींसाछे. ते विना वांदवुं दान देवु न थाय तो तमे पण हींसा विना धर्म मान्यो नहीं एम थशे.

प्रश्न. हींसाना कारणनो उपदेशसा धुने करवो योग नथी तमो पूजानो उ पदेश करो छो ते हींसानो करो छो.

उत्तर अमो हींसाना कारणे तो उपदेश नथी करता हींसानो तो त्रण करण त्रण जोगे करी त्यागछे. अने पू जानो उपदेश तो भव्यप्राणीनें शुद्ध मार्ग पमाम्वा माटे छे. तेने फायदाकारक

छे माहानिशीथ सूत्रमा कह्यु छे के ए
द्रव्य पूजा विरता विरतीने ससारपत
लो करनारी छे तथा आवश्यकमा कूप
दृष्टांत देखाड्यो जेम कोइ नवु गाम
वसाव्यु ते गाममा जलनु वहु दुख प
ड्यु तेवारे ते गामना लोको एक कुवो
खोदवानो उद्यम करवा लाग्या ते कु
वो खोदती वखते भूख त्रिपा सरिरे
धूल प्रमुख कष्ट थयु पण जेवारे पाणी
निकल्यु तेवारे तेमनी भूख त्रिपा मेल
सरवे जतो रह्यो अने आगामीकाले सु
खी थया तेम इहा श्रावक पूजा करे ते
मा प्रथम स्वरुप हींसा ते भक्तीभाव
नी दृष्टिए करी अनुबध दयाछे जेम मु

नि महाराज कल्पस्थितीए नदी उतरे
छे ते परमार्थे हींसा नथी तेम पूजामा
पण प्रथम स्वरुप हींसानो आरंभ वे
गलो थइने अनेक भवना पाप छूटी
जाय अने सुभानुबंधी बहु निर्झरा था
य एवु पूजानु फल छे तेनो उपदेश दे
वांमां शुं दोष छे

प्रश्न एतो तमे जाणीने हींसा क
रावी. जे तमे त्रिकरण जोगे पच्चखाण
कर्युं ते केम रहे

उत्तर हे भद्र एमा उपदेशरूप फ
ल देखाम्वामां तथा विधी कहेवामां
हींसा अमने लागती नथी जेम मुनि
उपदेश करे अहो भव्य आ मनुष्य

अवतारनु सार सम्यक्त तेनी करणी, जिन पूजा, तथा यात्रा, गुरुवदना, स्वामीवच्छल इत्यादिक छे ते करवाथी सम्यक्त निर्मल थाय तेवारे कोइ भव्य कहे पूजा जात्रा करवानी तथा मुनि वादवानी शी विधी छे तेवारे मुनि कहे प्रभाते उठीने नवकार गणवो. पछी देहरे जइ निसिही कहे तेनो परमारथ एजे ससारना बीजा सर्व कामनो त्याग थयो कुवा, वावी तलाव प्रमुख जावानो आरंभ तेनो त्याग थयो. वली प्रदक्षिणा दइने निसिही कहे तेनो परमारथ एजे देहराना कामना वेपारनो त्याग थयो. पछी शुद्ध जल गलीने ए

कांत शुद्ध भूमी जिहां लीलफूल तथा कीडी प्रमुख त्रस जीव न होय अगर भींजाएली नहोय एवी भूमी देखीने स्नान करे पछे पवित्र वस्त्र पहेरीने मुखे आठ पडो मुखकोस बांधी, अखंड वस्त्र उत्तरासण करी पोताना न्यायोपार्जीत धननी केसर, सूखड, धूप, अंगलुहणो विधिग्रहीत पूष्प उत्तम फुल नैवद्य, अक्षत पवित्र सुद्ध घ्रत प्रमुख सर्व थालीमां घाली ऊपर अंगलुहणो ढांकी ते थाल आडंवरथी देहरे पवित्र स्थानके पुंजीने मेले पछी सर्वत्र देहरामां काजो काढीने हाथ पवित्र करीने ओरशीउ पुंजी दढ करी जलें पवित्र क

री केसर घसी कटोरीमा लेइ धूप दइ
ने मूके बाकीनु केसर बीजी कटोरीमां
लइ पोते चांदलो प्रमुख करी बाकी ब
धे ते स्वामीजाइने अर्थे ढांकी मूके प
छी हाथ पवित्र करी देहरामां धूप उ
खेवे ते धूप पासे मुकीने जमणे पासे
दीवो मुकी पछी हाथ पवित्र करी मोर
पींछथी जिन प्रतिमाने पुजे खुणामा
तथा पलाठी प्रमुखमा सारी पेठे पुंजे
आगलनी पूजा उतरी होय ते एकात
निर्जीव भूमीए विखरे तेमां व

य ते,अलगा करी पछी जयणाएं पंचा
मृत जले पखाल करी, पछी शुद्ध जले
पखाल करे. ते पखालने जयणाथी ए
कांते परठे पण नित्यनु एक ठेकाणे प
रठे नहीं. जीव ऊपजे तेम करे नही.
पछी एक शुद्ध वस्त्रथी सर्व अंग लुहे
जलरहीत अंग करे पछी एक सूका व
स्त्रथी लुहीने पछी केसरनो कटोरो भ
र्यो ते लइने देव पूजनी अंगुली एट
ले टचली अंगुलीनी जोड्लीछे तेणे
करी नव अंगनी पूजा करे फूल चमा
वे पछी आंगी करवी होय तो विलेप
न करे आभुपणादिक पहरावी पछी मू
ल गभाराथी बहार आवी अष्टद्रव्य

लाव्या ते आगल ढोइ अष्टमंगल क
रे पछी निसिही कहे. इहां कल्पस्थिती,
ए द्रव्य पूजानो त्याग करी पछी इरि
यावही करे त्रणवार वंदना करी चैत्य
वंदन करे काउसग्ग करी स्तुति कही
स्तवन जयवियराय कहे ए भावपूजा,
विधीसहीत करे तेहनुं परपरा मोक्ष फ
लछे एम उपदेश देवामा साधुने शु हीं
साछे अने जो एम हींसा गणशो तो
तमारे सूत्र वांचवुं निषेध थशे वली सू
त्रमां श्रावक थिवर प्रमुखने वांदवा ग
या तेमनो वर्णव स्नान करी, देवपूजी
तिलक छापा करी बहु मुला वस्त्र घरे
णा पहेरी गयाछे ए परूपवुं हींसामां

गणाशे तथा दिक्षा महोत्र्व परूपवो पण हींसामां गणाशे तेमज साधुनुं सरिर वालवानुं तथा लीलोत्रीना त्याग नुं विवेचन श्रावकना व्रतनुं विवेचनए सर्व वध करवा पम्शे.

प्रश्न. ए तो त्यागछे जे नन्योलि लोतरी वहु जातनी ते सर्वनो आरंभ गा माटे लेवो अणगलेलु पाणी न पीवु विना जोयां इधणा न वालवां विना कारण अग्नि वालवानो अनर्थ दम्छे धान्य देख्या विना पीसवामांत्रस जीव मरे छे. साधुने वांदवानो महालान इत्यादिक उपयोग सहित वरते तो ते श्रावक परंपराए मोक्ष पामे एमांशुं

हींसाछे ? तमे तो जलादिकनो आरं
कहो छो. माटे पूजादिकमां हींसाछे. त्या
गमां तो हींसा नथी.

उत्तर. जे तमे लीलोत्रीनो विवेचन
तथा बीजा अनर्थ दंम देखाड्या तेमां
अर्थापत्ति न्याए छाणीने जल पीवो.
जोइने हलणां चालवा इत्यादिक प्रसि
द्ध हींसा छे पण तमारा भाव त्याग क
राववाना छे तथा मालिने वाढवा जाय

थया. एटलो संवर थयो. अने भगवंत नी पूजामां तेहनो भाव थयो तेथी शुभ भाव वरत्यो. विवेक आव्यो. सिद्धादिकनी गुणकीर्ति थइ. ए उपदेशमां अमोने शु हींसा लागी. जेम तमने हींसा न लागे तेम अमने पण न लागे

प्रश्न अमे तो ले लीलोत्री तथा काचा पाणीनु सर्वथा त्याग करे तो करावीए छीए तमो पूजानो सर्वथा त्याग केम नथी करावता ?

उत्तर अमे तो जेनी जेवी मर्यादा तेने तेवा त्याग करावीए छीए अने धर्म करणीनो त्याग कोइ जग्या सूत्रमां चाल्यो नथी जो तमे एम जाणशो के

हिंसा लागेछे तो तमे पण साधुने वां
दवा जवाना तथा साधु अर्थे कठी आ
हार प्रमुख आपवाना तथा दीक्षा म.
होत्सव करावववाना तथा साधुने ठाग
देवाना तथा धर्मना मुकान बंधाववाना
सर्वथा त्याग केम नथी करावता एमां
पण चालवानी कीआछे ठकायनो आ
रम्भछे ते हिंसा केम नथी वरजता लो
कोने उपदेश पूजामा हिंसाछे एवो थो
छे तो ए हिंसा केम नथी वरजता वांदवा
दिकनो फल रूमो शा माटे परूपो छो

प्रश्न अमो तो जयणाथी बोलीए
छीए जे जल गल्या विना पीशो ते पाप
अने तमे कहो छो स्नान करी पूजा कर

वी माटे ए हिंसा लागे?

उत्तर. अमे पण जयणाथी उपदेश करीए गीए तमे कहोगो तेम नथी वो लता जे स्नान कर्या विना पूजा करे तो आशातनाछे एम बोलतां शो दोष छे एहमां अमे असत्य आरंभ गोमाव वाना मतलवी गीए

प्रश्न. पूजातो बत्रीस सूत्रमां श्राव कने क्यांही कही नथी?

उत्तर ज्ञाता प्रमुख सूत्रमां साक्षा त छे तोपण तमे नथी देखता. अने ब त्रीस सूत्रनोज निर्णय करोगो ते शा आधारे.

प्रश्न. बत्रीस सूत्र तो भगवते पर

ष्या बीजा आचार्योए बनाव्या माटे ब त्रीस मानियेछीए

उत्तर. एम तो सर्वे सूत्र आचारंगना ज बनावेला छे जुवो दशवैकालीक श्री शय्यंभव आचार्ये बनाव्यो दशाकल्प अने व्यवहार सूत्र श्री भद्रबाहुस्वामी जीए बनाव्या पन्नवणासूत्र श्री कालीक सूरीए बनाव्यो एम उत्तराध्ययन नंदी सूत्र प्रमुख सर्वे आचार्यना बनावेला छे ते तमे केम मानो छो

प्रश्न एतो पूर्वधरना बनावेला छे माटे मानीएछीए

उत्तर तो निर्युक्ति चूरणी प्रमुख पण पूर्वधरनी बनावेली छे ते मानवामा

शुं दोषछे पूजानो तो सक्षेपे बत्रीसमां पण छे तो बीजा मानवानु शु अटके.

प्रश्न. बीजामां सावद्य छे जे निर्युक्तीमां भावना पूतला करवां कह्यां ए केम मनाय?

उत्तर कारणने अर्थे करे तेमां शो दोष एम कारणे तो श्री आचारंगमां सचित्त लुण वावरवो तथा सञोगी साधुनें वेंची आपवो तेने पण सावद्य मानवो जोइए

प्रश्न. एतो ठीकछे पण जे तमारा गछोमा परस्पर एक ग्रथ मानेछे एक ग्रंथ नथी मानता तेम अमे पण न मानीए?

प्यां बीजा आचार्योए बनाव्यां माटे
नीस मानियेछीए

उत्तर. एम तो सर्व सूत्र आचारे
ज बनावेलां छे जुओ दशवैकालीक
शय्यंभव आचार्य बनाव्यो दशा
अने व्यवहार सूत्र श्री भद्रबाहु
जीए बनाव्या पन्नवणासूत्र श्री
सूरीए बनाव्यो एम उत्तराध्य
सूत्र प्रमुख सर्व आचार्यना बना
ने तमे केम मानो छो

प्रश्न एतो पूर्वधरनां बना
माटे मानीएछीए.

उत्तर. तो नि रणा प्र
पण पूर्वधरनी बनावे मानव

उत्तर. जे तमो तिथिनुं तथा करेमि भतेनुं कहोछो ते तो ते गच्छवाळाए पोत पोतानी समाचारी करीछे पण बीजा ग्रथने निषेधता नथी. तथा चैत्यवंदन मां देवतानु आराधन कहोछो ते विघ्न निवारवाना कारण माटे ते गच्छना आ चार्योए बनावेला ग्रंथमां छे तो ते ग छवाळा करेछे अने जे देवनु आराधन नथी करता ते कहेछे के विघ्न आवे ते वारे ए देवनुं आराधन आचार्योए ग्रं थमां लख्युं ते कारणनुं छे नित्य कर वानुं नथी नित्य करवानु सावद्य जाणी ने नथी करता कारणे मानेछे ए कहचा थी ए सौए पण ग्रंथने प्रमाण राख्या

पण सर्वथा निषेध नथी करता अने तमो तो कहोशो जे बत्रीस उपरांत सूत्र न मानवां अने जो तमे एम कहेता होके ए पूजामां हिंसा माटे साधु न करे अने श्रावकने वरजी नथी तो तमारे पण कोइ सूत्र ग्रंथ न मानीए एवुं कहेवु न थाय

प्रश्न गछवाशी माहो माहे ए ग्रंथो उपर झघडा करेछे अने एक एकना चुर्मा बोलेछे तो एहुए ग्रथ सर्व केम मान्या

उत्तर जे चुमा बोलेछे लमेछे ते तेमनी चुलछे पण ग्रंथ तो सर्व गछवाशी मानेछे अने जे परस्परे झघडा करीछे

केहेछे जे आटला ग्रंथ आचार्योना न
थी मानता माटे निंनव छे एम बोलना
रा तो पोतानी मूरखता प्रगट करे छे ते
माटे सर्व ग्रंथनि वात तो कोइने प्रमा
ण नथी केमके घणा ग्रंथोमां प्रथम क
रेमि भंते कही पछे इरियावही कोइ ग्रं
थमां त्रणवार करेमि भंते उचरवी कही
ते केटलाक गच्छवाशीने प्रमाण नथी
अने बीजी वातो तो ते ग्रंथनी तेमने
प्रमाण तोपण एक वात तो ते ग्रंथनी
तेणे पण न मानी तो तेहुंने पण निन
वपणो थयो अने जे शाद्वादपणे उत्स
र्ग अपवाद न्याए जे प्रमाण करे ते ग्रं
थ उथापक न जाणवो माटे न्याए करी

तमो पण सर्व ग्रंथ प्रमाण करोतो शो
दोष छे ?

प्रश्न. दोषतो नथी पण जे सर्व गं
छमतवाला जीव दया माने छे अने को
इ मतवाला केहे छे के असंजती एटले
अन्यमति तथा अपचखाणी समकित
दृष्टि तथा विरता विरति तथा त्रिजच
एहुंने देवुं छे ते एकांत पाप छे नगवती
मा कह्युं छे एहने शु कहीए ?

उत्तर. जे नगवतीमां तो फक्त अ
संजति अविरती एम छे समकीत ड
ष्टी प्रमुखनो नाम नथी माटे साधर्मी
पणाथी समकित द्रष्टी प्रमुखने देवानुं
ना कहे छे ते जुठ छे केमके सम्यक्त द्र

ष्टिने देवामां सम्यक्त दृष्टिनुं कारण छे तथा महानिर्जरानुं कारण छे निशेधवा थी संसार वृद्धि थायछे अने वीजा अ संजती अन्यमति तथा त्रिजंचादिकने धर्म जाणी पोषे तो तेने पाप अने धर्म नेधा वरजवा तथा अनुकंपा अर्थे आ छे तो तेनो निषेध नथी धर्म निंदा टा ळतो जीव पुन्य वंध करे छे उतकृष्टपणे तिर्थंकर गोत्र वांधे छे.

प्रश्न. तिर्थंकर गोत्र वांधे छे ते तो ठीक पण तेने देवानुं पुन्य छे के पाप छे?

उत्तर. पुन्य पाप वेहु कहेवाना सुग नांग सूत्रमां नाकही छे.

प्रश्न त्यारे अमो शुं समजीए ते

असंजती खाइने पाप करे छे एमां पा
प समजीए के पुन्य ?

उत्तर. आपणे तो अनुकपा तथा धर्म निंद्या न थाय एम समजीए ते खाइने पाप करे छे ते पापछे ते पापना नागी आपण नथी वर्त्तमान कालमां वर्ते अनुकपा तथा धर्म प्रन्नावना तेज मानीए आगामी कालनी अपेक्षा इहां नथी गणता जेम जमाली आगामी कालमा अनर्थ करनारो तेहने वर्त्तमान नाव ग्रहीने नगवते मूंक्यो तेम जाणवु.

प्रश्न.. ए ठीकछे पण सूत्रमां तो ते वात नथी अने आचार्य नवी वात करे तो ते वात केम मनाय.

उत्तर. जे सूत्रमां निषेध नथी अने
निर्वद्य कोइ क्रिया आचरण आचार्य
करे ते प्रमाण करवी.

प्रश्न आचार्यनी करेली वात मा
ने अने तिर्थंकरनी न माने तो शुं दो
ष छे आपणा गुरू जे कहे ते प्रमाण
करवुं के नहीं?

उत्तर. प्रथम तो आचार्य तिर्थंकर
नां वचन उलंघन करेज नहीं अने जो
कदापि करे तो ते आचार्य अने ते आ
चार्यनां वचननो मान्य करनारो ए बेहुं
दुःख पामे ए उघनिर्युक्तिमां छे.

प्रश्न आचार्य विना गछ होय के
नहीं?

नी पण पुन्यनी करणी तो कोइ पण सूत्रमां अंम्ववानुं कहेता नथी बहु सूत्रो मां पुन्य करणीनुं फल उत्तम लखे छे के जीवने दयानुं फल दीर्घ आयु थाय त था वांदवानुं फल उंचगोत्र पामे इत्या दिक पुन्यनी करणी तेने कोइ सूत्रमां निषेधी नथी माटे पुन्यना फलनी इच्छा अंम्ववा जोग्य पण पुन्यनी करणी तो आदरवा जोग्य छे

प्रश्न- हमणाना कालमां तो कोइ नव तत्वमा पण भेद माने छे जेम कोइ आश्रवने जीव माने छे कोइ अजीव मा ने छे कोइ कल्याणक वीरनां छ माने छे कोइ पांच माने कोइ जक्षादिक देवोनो

ना आचार्यना अवर्णवाद बोले अने तेना गछनुं नाम धरावे ते तो महा पातकी छे इत्यादिक सर्व निर्णय जे सूत्र निर्युक्ति भाष्य चूरणी टीका प्रमुखमां कह्युं होय ते प्रमाण करवुं कोइ मतमां पडवुं नहीं अने पोताने निर्णय न थइ शके तो केवली कहे ते तहत छे एम कहीने पोते आत्मामां जाणी रहेवुं पण कोइ मत गछ पक्षीने पूछवुं नहीं निरापेक्षी होय तेने पूछवुं.

प्रश्न. निरापेक्षी कोने मानीए?

उत्तर. जे कोइ मतनी जक्षमां नथी गछनो पक्षपात पण करतो नथी अने जीतेंद्री एवो निराश्रवी होय ते पक्षपा

तप मोक्षहेतु माने कोइ न माने कोइ परंपरामां आचार्य छे तेने माने कोइ तेमना अवर्णवाद बोले एम धर्ममां अनेक भेद थइ गया तो हवे शु मानीए?

उत्तर. जे आश्रवने एकांत जीव माने एकांत अजीव माने ते निक्षेप नय द्रव्य गुण परियायने नथी जाणता ते एकांत बोलेछे अने ठाणंगजीनी टीकामांतो जीव अजीवथी भिन्न आश्रव कह्यो नथी एटले द्रव्य भाव भेद बेहुं छे कल्याणक तो पांचज छे पण गर्भहरण छठुं मान्यु ते कांइ कल्याणक नथी जङ्घादिक तपतो कोइ मोक्षहेतु माने नही एतो संसार हेतुज छे तथा परंपरा ग

त्मा आचार्यना अवर्णवाद बोले अ
ने तेना गछनुं नाम धरावे ते तो महा
पातकी छे इत्यादिक सर्व निर्णय जे सू
त्र निर्युक्ति भाष्य चूरणी टीका प्रमुख
मां कह्युं होय ते प्रमाण करवुं कोइ म
तमां पमवुं नहीं अने पोताने निर्णय
न थइ शके तो केवली कहे ते तहत छे
एम कहीने पोते आत्मामां जाणी रहे
वुं पण कोइ मत गछ पक्षीने पूछवुं न
हीं निरापेक्षी होय तेने पूछवुं

प्रश्न. निरापेक्षी कोने मानीए?

उत्तर. जे कोइ मतनी जममां नथी
गछनो पक्षपात पण करतो नथी अने
जीतेंद्री एवो निराश्रवी होय ते पक्षपा

रणी परमाण छे पण जे कोइ एम कहे के सम्यक्त तो पोताना आत्मामांज छे अथवा देव गुरू धर्म तेज मारो आत्मा छे एवुं धारीने जिनमंदिर दरिसन न करे गुरुने वादे नहीं धर्मनी करणी करे नहीं तो ते केवल मिथ्यात्वीज छे. केमके व्यवहार उथाप्यो माटे, ए सम्यक्त सर्व व्रतमां प्रथम धर्मनुं मूल छे ते अंगीकार करीने पछी व्रत ग्रहे तेमां

त रहीत छे एम सुगमांगजीमां कह्यु छे
माटे शुद्धधर्म आत्मामा धारवो ए ध
र्म तत्व त्रीजो ३ ए त्रण तत्व सुदेव १
सुगुरू २ सुधर्म ३ जे प्राणी धारे ते नि
श्चे मोक्षनो अधिकारी थाय एटले दे
व अरिहंत गुरू निर्ग्रंथ केवली नापी
त धर्म आदरे मिथ्यात्वनो त्याग करे
ए व्यवहार सम्यक्त छे ए व्यवहार स
म्यक्त विना व्यवहार करणी सर्व छार
उपर लींपण सरपी छे अने निश्चेमा
तो जे अर्थानेद करे अने आत्मस्वरुप
जाणे एवो पोतानो आत्मा तेज देव
गुरू धर्म छे एवो जेहने अनुनव थयो
तेने तो निश्चे सम्यक्त छे तेनी सर्व क

रणी परमाण छे पण जे कोइ एम कहे के सम्यक्त तो पोताना आत्मामांज छे अथवा देव गुरू धर्म तेज मारो आत्मा छे एवुं धारीने जिनमंदिर दरिसन न करे गुरुने वांदे नहीं धर्मनी करणी करे नहीं तो ते केवल मिथ्यात्वीज छे. केमके व्यवहार उथाप्यो माटे, ए सम्यक्त सर्व व्रतमां प्रथम धर्मनुं मूल छे ते अंगीकार करीने पछी व्रत ग्रहे तेमां प्रथम थूल प्राणातीपातनो त्याग त्रस जीव जाणीने विना अपराधे हणे नहीं १ बीजुं थूल मृपावाद ते कन्यालीक, भोमीलीक, गोवालीक, थापण मोसो, अने कुडी साख. ए पांच मोटां जुठ न

त रहीत छे एम सुगमांगजीमा कह्यु छे
माटे शुद्धधर्मि आत्मामा धारवो ए ध
र्म तत्व त्रीजो ३ ए त्रण तत्व सुदेव १
सुगुरू २ सुधर्म ३ जे प्राणी धारे ते नि
श्चे मोक्षनो अधिकारी थाय एटले दे
व अरिहत गुरु निग्रंथ केवली नापी
त धर्म आदरे मिथ्यात्वनो त्याग करे
ए व्यवहार सम्यक्त छे ए व्यवहार स
म्यक्त विना व्यवहार करणी सर्व छार
उपर लीपण सरपी छे अने निश्चेमा
तो जे ग्रथीन्नेद करे अने आत्मस्वरुप
जाणे एवो पोतानो आत्मा तेज देव
गुरू धर्म छे एवो जेहने अनुन्नव थयो
तेने तो निश्चे सम्यक छे तेनी सर्व क

उत्तर. समकितमांतो जूठ चोरीनो त्याग नथी फकत मिथ्यात्वनो त्यागछे जूठ चोरीनो तो बीजात्रीजा व्रतमां त्यागछे ओम जाणवुं. हवे सम्यक्त धारीने जे कांम न करवानां ते कहेछे चैत्यद्रव्यनुं रक्षण करे पण पोते खाय नहीं अने बीजाने खावा देवु नही १ चैत्यनी आसातना करवी नही २ चैत्यनी तथा साधुनी निंद्या करवी नहीं ३ धर्मनो उन्माह करवो नहीं ४ सूत्रनी अप्रतीत अविनय करवो नही ५ सर्वथा सतीनी साथे मैथुन सेववानी इच्छा करवी नहीं ६ अरिहंतना तथा संघना तथा व्यंतरादिक देवोना अवर्णवाद बो

बोले २ त्रीजो थूल अदत्ता दांन मोटी चोरी न करे ३ चोथो थूलमैथुन परस्त्री त्याग करे ४ पांचमो परीग्रहनुं प्रमाण करे ५ छठो दिशा परिमाण करे ६ सातमो भोगोपभोग प्रमाण करे ७ आठमो अनर्थ दंड त्याग करे ८ नवमो सामायक व्रतनु प्रमाण करे ए दसमो देशावगाशीक प्रमाण करे १० इग्यारमे पोसाव्रतनुं प्रमांण करे ११ बारमे अतिथी सविभाग व्रत करे १२ ए प्रमांण व्रतनु ग्रहण अव्रतनुं त्याग करे

प्रश्न केटलाएक कहेछे जे सम्यक्तमां तो जूठ चोरीनो त्याग थयो ते केम ?

उत्तर. समकितमांतो जूठ चोरीनो त्याग नथी फकत मिथ्यात्वनो त्यागछे जूठ चोरीनो तो बीजात्रीजा व्रतमां त्यागछे अेम जाणवु. हवे सम्यक्त धारीने जे कांम न करवानां ते कहेछे चैत्यद्रव्यनु रक्षण करे पण पोते खाय नहीं अने बीजाने खावा देवु नही १ चैत्यनी आसातना करवी नही २ चैत्यनी तथा साधुनी निंद्या करवी नहीं ३. धर्मनो उमाह करवो नही ४ सूत्रनी अप्रतीत अविनय करवो नहीं ५ सर्वथा सतीनी साथे मैथुन सेववानी इच्छा करवी नहीं ६ अरिहंतना तथा संघना तथा व्यंतरादिक देवोना अवर्णवाद बो

जवा नही इत्यादिक बोलवामां उपयो
ग राखवो सम्यक्त धारीने नित्ये देहरे
दरिशन करवु. मुनीनी जोगवाइ होय
तो वादवा अने जोग न होय तो दिशा
अवलोकी वादवा स्वामीजाइनी सहाय
करवी धर्मनी निंदा करे तेनी पासे उभु
रहेवु नहीं अने शक्ति होय तो तेने वर
जवो इत्यादिक सम्यक्तने दीपाववाना
कारणमा वर्तवुं ओ सारुं मनुष्य अ
वतार पामीने ओ त्रण तत्व जेणे न
जाण्यां तेनो जन्मारो वृथा गयो जा
णवो ओम जाणी अहो भव्यो धर्मने
सेवो ओ संक्षेप उपदेश.

दुहा.

आतम तत्वने ओळखी।
वांचो तत्व विवेक ॥
वादविवाद विचारीने ॥
मेलो मिथ्या टेक. ॥१॥
साची वातो सवनकी।
होत अेकही रीत ॥
जुठीवातों मतनकी ।
होत सवे विपरीत ॥२॥
गच्छमत तजीने गमकरो।
सत्या सत्य विचार ॥
सूरि राजेंद्र जिन सूत्रनो।
आधिको जग आधार ॥३॥

---

३ शेठ गलावचदजी एवजी	गाम भीन्नमाल
३ शा हकमा रेताजी	"
२ शा मोटा मन रूपजी	"
२ शा भार गराजी	"
१ शा भगवान वग्ताजी	"
१ शा मलुकजी खेताजी	"
१ शा नवा हींदुजी	"
१ शा लीला गमानजी	"
१ शा अमा जोराजी	"
१ शा नेथी अमराजी	"
१ शा कसना गवाजी	"
१ शा गरजदजी	"
१ शेठ वरदा अखाजी	"
१ शेठ दलीचद अखाजी	"
१ शा भगवान चतरजी	"
१ शा सवदान खेताजी	"
१ शा हसा सरीचदजी	"
१ शा जना लदाजी	"

शुद्धिपत्रक

पा	ओ	अशुद्ध	शुद्ध
५	९	भागवती	भगवती
८	२	अमारा	आ मारी
१६	१८	अल्पस्तत्र	अल्पसत्व
१७	६	कलुशीन	कलुसित
१९	१०	एटले अरिह	एटले ए वे अरिह
२६	१	एम निक्षेपो	एम नाम निक्षेपो
२६	८	ए द्रव्यान	द्रव्य नि
३१	१	अवप्प	अवस्य
७१	८	दशपूर्व	दश पूर्वी
७९	७	वाळ	वाल्य
८९	१०	पोपा	पोशा

२ शेठ गलानचदजी खुनजी	गाम भीन्नमाल
२ शा हकमा खेताजी	,,
२ शा मोटा मन रुपजी	,,
२ शा भार गराजी	,,
१ शा भगवान वरदाजी	,,
१ शा मलुकजी खेताजी	,,
१ शा जवा हींदुजी	,,
१ शा लीला गमानजी	,,
१ शा अमा जोराजी	,,
१ शा नेथी अमराजी	,,
१ शा कसना गवाजी	,,
१ शा गरजदजी	,,
१ शेठ वरदा अखाजी	,,
१ शेठ दलीचद अखाजी	,,
१ शा भगवान चतरजी	,,
१ शा सवदान खेताजी	,,
१ शा हसा सरीचदजी	,,
१ शा जना लदाजी	,,